आत्म विज्ञान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

किसी भी विषय के विशिष्ट ज्ञान को विज्ञान कहते हैं। विज्ञान में क्रमबद्धता रहती है। विज्ञान में निरीक्षण और परीक्षण होता है। आत्म विज्ञान आत्मा का विज्ञान है। विज्ञान बाहरी वस्तुओं पर शोध करके कोई निश्चित निष्कर्ष निकालता है। आत्मा एक ऐसा तत्त्व है जिसका निरीक्षण व परीक्षण नहीं किया जा सकता। आत्मा के ऊपर भारतीय दर्शन और धर्मशास्त्रों में गम्भीर विवेचन हुआ है। आत्मा के अस्तित्व को मानकर के ही अन्य वस्तुओं के अस्तित्व को सिद्ध किया जा सकता है। आत्मा चेतन तत्व है। सभी चेतन प्राणियों के अन्दर आत्मा का वास होता है। आत्म सचिदान्नद स्वरूप है। सभी प्राणियों के अन्दर आत्मा का सागर लहरा रहा है। फिर भी लोग आत्मा के अस्तित्व को नहीं मानते। मृग के अन्दर कस्तुरी होती है, किन्तु वह कस्तुरी को बाहर खोजते–खोजते प्राण दे देता है। कस्तूरी का ज्ञान उसे नहीं हो पाता। मानव के साथ भी यही समस्या है। आत्मा हमारा अस्तित्व है, फिर भी हमें आत्मा का ज्ञान नहीं होता।

मानव के मन के अन्दर जो आनन्द का उत्स है उसे जानना चाहिए। मैं कौन हूं ? यह जान लेने से मानव को आनन्द की प्राप्ति होती है। मैं कहां से आया हूँ? इसका ज्ञान अवश्य होना चाहिए। कुछ लोग शरीर को ही आत्मा मानकर व्यवहार करते हैं। किन्तु शरीर आत्मा नहीं है। शरीर पंच भौतिक पदार्थों का समवाय है। पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पॉचों तत्व भौतिक हैं। इन्हें पंचभूत कहा जाता है। सम्पूर्ण सृष्टि इसी भौतिक पदार्थ से बनी है। जब इस भौतिक पदार्थ का आत्मा का संसर्ग होता है तो यह भी चेतनवत हो जाती है। किन्तु जब आत्मा इससे निकल जाता है तो भौतिक पदार्थ संज्ञा शून्य हो जाता है। इस शरीर में नौ द्वार हैं। इसलिए कहा गया है– **नव द्वारे पुरे देही** अर्थात् यह शरीर नव द्वारों वाला है। जैसे ही इस शरीर से आत्मा का अलगाव हुआ शरीर जो मिट्टी का चोला कहलाता है, मिट्टी में ही मिल जाता है। कृ कृ

आत्मा स्वप्रकाश है। आत्मज्ञान अस्तित्व बोध है। अंधेरे से ऊजाले की ओर जाने का कार्यक्रम है। आदमी पद प्रतिष्ठा, ज्ञान, ध्यान प्राप्त कर सकता है, किन्तु अपने को पहचानना बहुत बड़ी बात है। जितने भी धार्मिक ग्रन्थ हैं उनमें ज्ञान को प्राप्त करना सबसे कठिन माना गया है। जिसका आत्मज्ञान प्राप्त हो जाता है वह सच्चिदानन्द स्वरूप हो जाता है। मनुष्य सृष्टि का सबसे बुद्धिमान प्राणी है। यदि मानव में सुधार हो जाये तो सब कुछ सुधर सकता है। मानव के पास विकसित मन है, विकसित बुद्धि है, किन्तु वह उसका सदुपयोग न करके दुरूपयोग करता है। आज विश्व में चारों तरफ हिंसा, आतंकवाद, भ्रष्टाचार और दुराचार का बोलबाला है। ऐसा इसलिए है कि इससे जुड़े हुए लोग अपने समान दुसरे प्राणियों को नहीं मानते। इसलिए वे दूसरे प्राणियों की हिंसा करते हैं, दूसरे प्राणियों के अस्तित्व को नकारते हैं।

आजा विश्व की अनेक समस्याएं अस्तित्व बोध न होने के कारण पैदा हुई हैं। सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण की है। मनुष्य को यह ज्ञान नहीं है कि वृक्ष भी चेतन है। जिस प्रकार मानव का अंग छेदन–भेदन होने पर कष्टानुभूति होती है उसी प्रकार इन वृक्षों को भी कष्टानुभूति होती है। विज्ञान ने इसे सिद्ध कर दिया है। भारतीय शास्त्रों में **परस्परोपग्रहो जीवानाम्** अर्थात एक जीव को दूसरे जीव के साथ उपग्रह भावना से रहना चाहिए। अपने समान दूसरे प्राणियों के अस्तित्व को मानना चाहिए। भारत एक आध्यात्मिक देश है। यहां पर आत्मा, परमात्मा, जीव–जगत, बंधन, मोक्ष, कर्म और धर्म पर बड़ा गंभीर चिंतन किया गया है। विज्ञान भी यहां के चिंतन का विषय रहा है। किन्तु विज्ञान पर उतना बल नहीं दिया गया जितना अध्यात्म पर। अध्यात्म के कारण ही भारत को विश्वगुरु कहा जाता है। इस देश में जन्म लेने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने चरित्र के द्वारा अन्य देशवासियों को शिक्षा देता है। विवेकानन्द का यह महावाक्य की भारत के लोग वस्त्र से नहीं बल्कि चरित्र से ऊँचे होते हैं। चरित्र ही व्यक्ति को महान बनाता है। चरित्र की पूजा तभी होती है जब मनुष्य में सदगुण हो। सद्गुण ही सबसे बड़ा धर्म है।

जब आत्मा, परमात्मा, जीव–जगत की बात की जाती है तो सहज में ही हमारा चिंतन दर्शन की ओर जाता है। भारत में दर्शन की अनेक शाखाएं है। सभी शाखाओं में अध्यात्म पर चिंतन किया गया है। भारतीय दर्शन आत्मवादी, कर्मवादी एवं पुनर्जन्मवादी है। संसार का प्रत्येक

प्राणी अपने आपमें एक आत्मा है और कर्मों से बद्ध है, आवृत है। कर्म पुनर्जन्म का मूल कारण है। तत्त्वमीमांसा की दृष्टि से आत्मा का अस्तित्व अनादिकालीन है, स्वतंत्र है, वास्तविक है। आत्मा या जीव अस्तिकाय है। प्रत्येक आत्मा असंख्य 'प्रदेशों' का पिण्ड है। प्रत्येक आत्म–प्रदेश के साथ कर्म पुद्गलों का संयोग होता है और कर्म के द्वारा उत्पन्न प्रभाव से आत्मा एक जन्म से दूसरे जन्म में गमन करती रहती है। कर्म अपने आपमें जड़ है फिर भी आत्मा के साथ बद्ध होने से उनमें आत्मा को प्रभावित करने की शक्ति उत्पन्न हो जाती है। आत्मा और कर्म में भेद करने वाला ही ज्ञानी है। ज्ञानी जल में कमलवत् जीवनायापन करता है। मनुष्य जीवन अति दुर्लभ है। मनुष्य जीवन में आत्म विज्ञान का ज्ञान होना बहुत आवश्यक है। आत्मा में श्रद्धा होनी चाहिए।